7
नवभारत
जबलपुर, रविवार, 13 सितंबर 2026

रंग हमारे मन और व्यवहार को करते हैं प्रभावित

ज्योतिषाचार्य
पंडित प्रमोद पांडे

रंगों की दुनिया और मानव मन- रंगों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे दिखाई तो आंखों से देते हैं, लेकिन उनका अर्थ मन में बनता है. एक ही लाल रंग किसी के लिए प्रेम हो सकता है, किसी के लिए खतरा और किसी अन्य के लिए उत्सव. एक ही सफेद रंग किसी के लिए शांति, किसी के लिए विवाह और किसी के लिए शोक का प्रतीक हो सकता है. इसलिए रंगों का मनोविज्ञान केवल यह समझने का विषय नहीं है कि कौन सा रंग हमें कैसा महसूस कराता है. यह मानव मस्तिष्क, संस्कृति, स्मृति, अनुभव और सामाजिक व्यवहार के बीच संबंध को समझने का भी एक माध्यम है. आधुनिक जीवन में रंगों का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है. घरों से लेकर अस्पतालों तक, स्कूलों से लेकर कार्यालयों तक और विज्ञापनों से लेकर मोबाइल स्क्रीन तक, रंग हमारे निर्णयों और अनुभवों का हिस्सा बन चुके हैं. आने वाले समय में मनोविज्ञान, तंत्रिका-विज्ञान, डिजाइन और विपणन के बीच बढ़ता संबंध रंगों को समझने के नए रास्ते खोल सकता है. अंततः रंग केवल प्रकाश की अलग-अलग तरंगें नहीं हैं. मनुष्य ने उन्हें अर्थ दिए हैं, उनसे भावनाएं जोड़ी हैं और उन्हें अपनी संस्कृति का हिस्सा बनाया है. शायद यही कारण है कि कभी-कभी कोई रंग हमें बिना एक शब्द कहे बहुत कुछ कह जाता है.

रंग हमारे जीवन का इतना सामान्य हिस्सा हैं कि अक्सर हम उनके प्रभाव पर ध्यान ही नहीं देते. सुबह उठते ही दिखाई देने वाले आसमान के रंग से लेकर कपड़ों, घर की दीवारों, भोजन, विज्ञापनों, मोबाइल की स्क्रीन और सड़कों पर लगे संकेतों तक, रंग हर जगह मौजूद हैं. फिर भी किसी कमरे में प्रवेश करते ही हमें एक रंग शांत महसूस करा सकता है, जबकि दूसरा रंग बेचैनी या ऊर्जा का अनुभव करा सकता है. किसी व्यक्ति का लाल कपड़ा हमें अधिक प्रभावशाली दिखाई दे सकता है, वहीं नीला रंग भरोसे और स्थिरता की भावना पैदा कर सकता है. यही कारण है कि रंगों को केवल देखने की वस्तु नहीं, बल्कि मानव मन और व्यवहार से जुड़ा एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है.

लाल रंग : ऊर्जा, खतरा और आकर्षण- लाल रंग सबसे अधिक ध्यान खींचने वाले रंगों में माना जाता है. यह ऊर्जा, शक्ति, उत्साह, प्रेम और खतरे जैसी अलग-अलग भावनाओं से जुड़ सकता है. यातायात संकेतों में लाल रंग का इस्तेमाल रुकने के लिए किया जाता है, जबकि उत्सवों और विवाहों में यही रंग प्रेम, उत्साह और शुभता का प्रतीक बन जाता है. लाल रंग का प्रभाव केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है. कई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में यह देखा गया है कि लाल रंग व्यक्ति का ध्यान जल्दी आकर्षित करता है. इसी कारण विज्ञापन और विपणन में इसका व्यापक इस्तेमाल होता है. बिक्री के संकेत, छूट के बोर्ड और महत्वपूर्ण संदेशों में लाल रंग का प्रयोग लोगों का ध्यान खींचने के लिए किया जाता है.

नीला रंग : शांति और विश्वास का प्रतीक- नीला रंग सामान्यतः शांति, स्थिरता, भरोसे और गंभीरता से जोड़ा जाता है. आकाश और समुद्र का प्राकृतिक रंग होने के कारण नीले रंग के साथ विशालता और स्थिरता की अनुभूति भी जुड़ी हुई है. इसी कारण कई संस्थान और कंपनियां अपने लोगो तथा डिजिटल मंचों पर नीले रंग का इस्तेमाल करती हैं. बैंक, तकनीकी कंपनियां और संस्थागत संगठन अक्सर ऐसे रंगों को प्राथमिकता देते हैं जो भरोसे और स्थिरता का संकेत देते हों.

पीला रंग : प्रसन्नता, चेतावनी और सक्रियता- पीला रंग चमकीला और आसानी से दिखाई देने वाला रंग है. इसे अक्सर खुशी, आशावाद, ऊर्जा और रचनात्मकता से जोड़ा जाता है. सूर्य के प्रकाश से इसकी समानता के कारण पीले रंग में स्वाभाविक रूप से गर्माहट की अनुभूति हो सकती है. लेकिन यही रंग चेतावनी का संकेत भी बन सकता है. यातायात और औद्योगिक क्षेत्रों में पीले रंग का प्रयोग सावधान करने के लिए किया जाता है. इसका कारण इसकी उच्च दृश्यता है. दूर से भी पीला रंग आसानी से दिखाई देता है.

हरा रंग : प्रकृति और संतुलन- हरा रंग सीधे तौर पर प्रकृति से जुड़ा हुआ है. पेड़-पौधों और वनस्पतियों में इसकी उपस्थिति के कारण यह जीवन, विकास, ताजगी और संतुलन का प्रतीक माना जाता है. शहरों में हरे क्षेत्र लोगों को मानसिक रूप से राहत देने में मदद कर सकते हैं. प्रकृति के बीच समय बिताने और हरियाली देखने को तनाव कम करने तथा मानसिक आराम से जोड़कर देखा गया है. यही कारण है कि अस्पतालों, घरों और कार्यस्थलों के डिजाइन में भी हरे रंग और प्राकृतिक तत्वों का इस्तेमाल किया जाता है.

काला रंग : शक्ति, रहस्य और औपचारिकता- काला रंग दुनिया के लगभग हर समाज में किसी न किसी गहरे अर्थ से जुड़ा है. इसे शक्ति, औपचारिकता, रहस्य और गंभीरता के साथ-साथ शोक से भी जोड़ा जाता है. फैशन की दुनिया में काला रंग लंबे समय से लोकप्रिय है. औपचारिक कपड़ों में इसका इस्तेमाल गंभीर और सधे हुए व्यक्तित्व की छवि बनाने के लिए किया जाता है. कई संस्कृतियों में मृत्यु और शोक के समय काले कपड़े पहनने की परंपरा भी है.

सफेद रंग : सादगी, शांति और पवित्रता- सफेद रंग को अक्सर शांति, स्वच्छता, सादगी और पवित्रता से जोड़ा जाता है. अस्पतालों और चिकित्सा संस्थानों में सफेद रंग का इस्तेमाल स्वच्छता और साफ-सफाई की भावना पैदा करने के लिए किया जाता है. भारतीय संस्कृति में सफेद रंग का संबंध शांति और सादगी से है. वहीं कुछ अन्य संस्कृतियों में सफेद रंग विवाह और उत्सव का प्रतीक है. भारत में कई परिस्थितियों में यही रंग शोक और वैराग्य से भी जुड़ा हुआ है.

रंग और भोजन : आंखों से शुरू होती है भू- रंगों का प्रभाव भोजन के अनुभव पर भी पड़ता है. भोजन को देखते समय हमारी इंद्रियां पहले ही उसके बारे में एक धारणा बना लेती हैं. चमकीले और प्राकृतिक रंगों वाली सब्जियां तथा फल अक्सर ताजगी का संकेत देते हैं. खाद्य उद्योग इसी मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया का इस्तेमाल करता है. पैकेट, रेस्तरां, विज्ञापन और भोजन की प्रस्तुति में ऐसे रंग चुने जाते हैं जो उत्पाद को आकर्षक दिखाएं. भोजन का रंग हमारी अपेक्षा को भी प्रभावित कर सकता है. किसी खाद्य पदार्थ का रंग उसकी वास्तविक स्वाद अनुभूति से पहले ही हमारे मस्तिष्क में एक अनुमान पैदा कर सकता है. इसलिए भोजन केवल स्वाद से नहीं, बल्कि देखने के अनुभव से भी जुड़ा हुआ है.

रंग और कपड़े : व्यक्तित्व की दृश्य भाषा- कपड़े केवल शरीर ढकने का माध्यम नहीं हैं. वे व्यक्ति की सामाजिक पहचान और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बन सकते हैं. लोग अलग-अलग परिस्थितियों में अलग रंग चुनते हैं. नौकरी के साक्षात्कार में गंभीर रंग, उत्सव में चमकीले रंग और आराम के समय हल्के रंग चुनने की प्रवृत्ति सामान्य रूप से देखी जा सकती है. हालांकि किसी व्यक्ति के कपड़ों के रंग से उसके पूरे व्यक्तित्व का अनुमान लगाना वैज्ञानिक रूप से उचित नहीं है. पसंद कई चीजों से प्रभावित होती है, जैसे संस्कृति, फैशन, मौसम, उम्र और व्यक्तिगत अनुभव. फिर भी रंग व्यक्ति की स्वयं के बारे में धारणा को प्रभावित कर सकते हैं. जिस रंग में कोई व्यक्ति खुद को सहज और आत्मविश्वासी महसूस करता है, वह उसके व्यवहार पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकता है.

हरतालिका तीज जानिए इसका महत्व

पूजा मुहूर्त और व्रत की मान्यता

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि पर मनाया जाने वाला हरतालिका तीज का पर्व इस वर्ष 14 सितंबर, सोमवार को रखा जाएगा. धार्मिक मान्यता के अनुसार यह दिन भगवान शिव और माता पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक है.

सुहागिन महिलाएं पति की दीर्घायु, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी दांपत्य जीवन की कामना से निर्जला व्रत रखती हैं. वहीं अविवाहित कन्याएं मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए यह व्रत करती हैं. पंचांग के अनुसार तृतीया तिथि 13 सितंबर सुबह 7:08 बजे शुरू होकर 14 सितंबर सुबह 7:06 बजे तक रहेगी. उदयातिथि के अनुसार व्रत 14 सितंबर को रखा जाएगा.

हरतालिका तीज को महिलाओं के तप, त्याग, प्रेम और अटूट संकल्प से जोड़कर देखा जाता है. पौराणिक कथा के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए वर्षों तक कठोर तपस्या की थी. उन्होंने अन्न और जल का त्याग कर महादेव की आराधना की. उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया.

इसी मान्यता की स्मृति में महिलाएं श्रद्धा और नियम के साथ हरतालिका तीज का व्रत रखती हैं.

मिट्टी के शिव-पार्वती बनाकर होता है पूजन

तीज पर पूजा के लिए मिट्टी या बालू से भगवान शिव, माता पार्वती और गणेश की प्रतिमा अथवा शिवलिंग तैयार करने की परंपरा है. पूजा स्थल को शुद्ध कर चौकी पर लाल या पीला कपड़ा बिछाया जाता है. भगवान शिव को बेलपत्र, धतूरा, फूल, अक्षत और फल अर्पित किए जाते हैं. माता पार्वती को सिंदूर, मेहंदी, चूड़ी, चुनरी और अन्य सुहाग सामग्री चढ़ाई जाती है. इसके बाद हरतालिका तीज की कथा सुनकर आरती की जाती है. कई स्थानों पर महिलाएं रातभर जागरण और भजन-कीर्तन भी करती हैं. अगले दिन सुबह पूजा और प्रसाद के बाद व्रत का पारण किया जाता है.

घर पर गणपति स्थापना से पहले समझ लें ये जरूरी नियम

गणेश चतुर्थी का पर्व इस बार 14 सितंबर, सोमवार को मनाया जाएगा. गणपति बप्पा के स्वागत के लिए घरों में तैयारियां शुरू हो गई हैं. कई श्रद्धालु इस दिन बिना पंडित के स्वयं गणेशजी की मूर्ति स्थापित कर विधि-विधान से पूजा करना चाहते हैं. ऐसे में पूजा का सही समय, मूर्ति स्थापना की विधि, पूजा सामग्री और जरूरी नियमों की जानकारी होना जरूरी है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को दोपहर के समय भगवान गणेश का जन्म हुआ था. इसलिए गणेशजी की स्थापना और पूजा के लिए दोपहर का समय विशेष शुभ माना जाता है.

इस वर्ष चतुर्थी तिथि 14 सितंबर को सुबह 7 बजकर 6 मिनट से शुरू होगी और 15 सितंबर को सुबह 7 बजकर 44 मिनट तक रहेगी. गणेश मूर्ति स्थापना और पूजा का शुभ मुहूर्त 14 सितंबर को सुबह 11 बजकर 2 मिनट से दोपहर 1 बजकर 31 मिनट तक रहेगा. इस अवधि में श्रद्धालु घर में गणेशजी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा-अर्चना कर सकते हैं.

पूजा से पहले घर और पूजा स्थल की सफाई कर चौकी पर स्वच्छ वस्त्र बिछाएं. इसके बाद गणेशजी की प्रतिमा स्थापित कर जल, अक्षत, रोली, सिंदूर, फूल, दूर्वा, धूप और दीप अर्पित करें. भगवान गणेश को मोदक या लड्डू का भोग लगाकर उनके मंत्र का जाप करें और अंत में आरती करें. गणेशजी की पूजा में दूर्वा और मोदक का विशेष महत्व माना जाता है.

इस दिन राहुकाल सुबह 7 बजकर 57 मिनट से 9 बजकर 29 मिनट तक रहेगा, इसलिए इस अवधि में मूर्ति स्थापना से बचने की सलाह दी जाती है. वहीं इस बार भद्रा का समय स्थापना के शुभ मुहूर्त से अलग है, इसलिए स्थापना के समय भद्रा को लेकर विशेष बाधा नहीं रहेगी. घर में गणपति स्थापित करने वाले श्रद्धालु अपनी परंपरा और श्रद्धा के अनुसार सरल विधि से पूजा कर सकते हैं.

नीलकंठ का दिखना माना जाता है बेहद शुभ

भारतीय परंपरा में नीलकंठ पक्षी को विशेष महत्व दिया गया है. ज्योतिष और लोक मान्यताओं में इसके दर्शन को शुभ संकेत माना जाता है. मान्यता है कि नीलकंठ का दिखाई देना जीवन में सकारात्मक बदलाव, सफलता और अच्छे समाचार का संकेत हो सकता है.

खासकर किसी महत्वपूर्ण काम पर जाते समय इसका दिखना शुभ माना जाता है. हालांकि, ये बातें धार्मिक और लोक मान्यताओं पर आधारित हैं, इनका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है. मान्यता के अनुसार नीलकंठ भगवान शिव से भी जुड़ा हुआ माना जाता है. भगवान शिव का एक नाम नीलकंठ है, इसलिए इस पक्षी के दर्शन को कई जगह धार्मिक दृष्टि से भी शुभ माना जाता है. ग्रामीण और पारंपरिक समाज में आज भी नीलकंठ को सौभाग्य और मंगल का प्रतीक माना जाता है. लोक मान्यताओं में नीलकंठ के दर्शन को अलग-अलग दिशाओं से भी जोड़ा जाता है. पूर्व दिशा में दिखाई देने पर इसे नए अवसरों और कार्यों में सफलता का संकेत माना जाता है. उत्तर दिशा में दर्शन को आर्थिक लाभ और उन्नति से जोड़कर देखा जाता है. वहीं यात्रा के दौरान नीलकंठ दिखाई दे तो यात्रा के सफल होने की मान्यता है. काम में सफलता से भी जोड़ा जाता है किसी महत्वपूर्ण कार्य, यात्रा या नए काम की शुरुआत से पहले नीलकंठ दिखाई देना शुभ माना जाता है.

राधा अष्टमी पर भोग और पूजन की विधि

धार्मिक मान्यता है कि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन राधा रानी का जन्म हुआ था. इसलिए इस दिन मंदिरों और घरों में विशेष पूजा, भजन-कीर्तन और जन्मोत्सव के आयोजन किए जाते हैं.

राधा रानी के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाने वाली राधा अष्टमी को लेकर इस बार तिथि को लेकर असमंजस की स्थिति है. भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि 18 सितंबर से शुरू होगी और 19 सितंबर की दोपहर तक रहेगी. उदया तिथि के आधार पर राधा अष्टमी का पर्व 19 सितंबर, शनिवार को मनाया जाएगा. इस दिन राधा रानी की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने के साथ व्रत रखने की भी परंपरा है.

पंचांग के अनुसार अष्टमी तिथि की शुरुआत 18 सितंबर को दोपहर 1 बजकर 2 मिनट से होगी, जबकि इसका समापन 19 सितंबर को दोपहर 3 बजकर 28 मिनट पर होगा. उदया तिथि 19 सितंबर को होने के कारण इसी दिन राधा अष्टमी का पूजन किया जाएगा.

धार्मिक मान्यता है कि भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन राधा रानी का जन्म हुआ था. इसलिए इस दिन मंदिरों और घरों में विशेष पूजा, भजन-कीर्तन और जन्मोत्सव के आयोजन किए जाते हैं.

राधा अष्टमी पर पूजा के लिए सुबह स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने और सूर्यदेव को जल अर्पित करने के बाद व्रत का संकल्प लेने की परंपरा है.

इसके बाद पूजा स्थल पर पीले वस्त्र से सजी चौकी पर राधा रानी और भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित कर गंगाजल से शुद्धिकरण किया जाता है. चंदन, रोली, फूल, धूप-दीप और अन्य पूजन सामग्री अर्पित कर राधा रानी की आराधना की जाती है.

पूजा में राधा रानी को खीर और अरबी की सब्जी का भोग लगाने की मान्यता बताई गई है. इस दिन राधा रानी के नाम और मंत्र का जाप भी किया जाता है. धार्मिक मान्यता के अनुसार राधा अष्टमी की पूजा दोपहर में करना शुभ माना जाता है.

व्रत रखने वाले श्रद्धालु अपनी परंपरा के अनुसार आहार ग्रहण करते हैं और अगले दिन दान-दक्षिणा तथा भोजन कराने की परंपरा निभाते हैं.

संतान सप्तमी पर करें शिव-पार्वती की पूजा, ऐसे करें व्रत कथा

संतान की लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी जीवन की कामना से रखा जाने वाला संतान सप्तमी व्रत इस साल 18 सितंबर, शुक्रवार को मनाया जाएगा. इसे मुक्ताभरण सप्तमी के नाम से भी जाना जाता है. भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को यह व्रत रखा जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करने से संतान की रक्षा और परिवार में सुख-शांति का आशीर्वाद मिलता है. निःसंतान दंपती भी संतान प्राप्ति की कामना से यह व्रत रखते हैं. उदया तिथि के आधार पर संतान सप्तमी का व्रत 18 सितंबर को रखा जाएगा. इस व्रत में सात अंक का विशेष महत्व माना जाता है. पूजा के दौरान सात गांठों वाला रक्षा सूत्र तैयार कर भगवान शिव-पार्वती को अर्पित किया जाता है.

पूजा के बाद महिलाएं इसे अपनी कलाई पर बांधती हैं और इसे संतान की सुरक्षा का प्रतीक माना जाता है. व्रत के दिन दोपहर में पूजा करने की परंपरा बताई गई है. इसके लिए चौकी पर भगवान शिव और माता पार्वती की प्रतिमा स्थापित कर विधि-विधान से पूजा की जाती है. पूजा में धूप, दीप, फूल, अक्षत और अन्य पूजन सामग्री अर्पित करने के साथ सात गांठों वाला सूत का धागा भी चढ़ाया जाता है. इस दिन गुड़ और आटे से बने पुए का भोग लगाने की मान्यता है. सात पुए भगवान को अर्पित किए जाते हैं और सात पुए ब्राह्मण या जरूरतमंद को दान करने की परंपरा बताई गई है.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 13 से 19 सितम्बर 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में ता. 17 को 11/37 रात से कन्या राशि में, मंगल मिथुन राशि में ता. 18 को 3/3 दिन से कर्क राशि में, बुध कन्या राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कन्या तुला वृश्चिक और धनु राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 13 को चन्द्रदर्शन के प्रभाव से तेल, तिलहन, गेहूं, चावल, उडद, चना में घटा बढी के साथ तेजी आयेगी. रूई, चांदी, सोना, सूत, कपास में भी तेजी के संकेत हैं. ता. 14 को उत्तराफल्गुनी रवि हस्ते बुध के प्रभाव से रूई, कपास, रेशम, सूत, लोहा, चावल, घी, तेल, तिल, अलसी, सरसों, एरण्ड, उडद, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील, तेज होगें. सोने चांदी एवं शेयरों में मंदी आयेगी. ता. 17 को कन्यायां रवि रूई, सूत, कपडा, नारियल, सुपारी, मेवा, मजीठ, लाल वस्तु, एरण्ड, तेल, तिल, सरसों, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल, रेशम में मंदी लाता है. ता. 18 को कर्के भौम के प्रभाव से गुड, खांड, शक्कर, रूई, घी, तेल, सरसों, अलसी, एरण्ड तथा समस्त अनाजों में तेजी आयेगी. चांदी में घटा बढी होती है.

पर्व-व्रत-त्योहार :

रविवार	13 सितम्बर को	वाराह जयंती,
सोमवार	14 सितम्बर को	हरितालिका तीज व्रत, गणेश चतुर्थी, श्री गणेश प्रकटोत्सव, श्री गणेश उत्सव प्रारम्भ, चौथ चन्द्र व्रत, चन्द्रदर्शन निषेध,
मंगलवार	15 सितम्बर को	ऋषि पंचमी
गुरूवार	17 सितम्बर को	मौरयाई छठ, सूर्य षष्ठी, ललिता चम्पा षष्ठी व्रत, संतान सप्तमी,
शुक्रवार	18 सितम्बर को	मुक्ता भरण सप्तमी, महालक्ष्मी व्रतारम्भ, सौर आश्विन (क्वांर) मास प्रारम्भ,
शनिवार	19 सितम्बर को	श्री राधाष्टमीं, दूर्वाष्टमीं,

मेष

इस सप्ताह आर्थिक मामलों से निपटना होगा, पुराने कर्जो से छुटकारा पाने के लिये आपको योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना पड़ेगा. पारिवारिक आयोजनों में आप बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे, बच्चों के कैरियर को लेकर चिन्ता रह सकती है, मानसिक तनाव की स्थिति से छुटकारा मिलेगा, जिस पर विश्वास कर रहे हैं, वे लोग आपका साथ छोड़ सकते हैं.

वृषभ

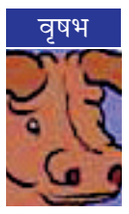

नये संपर्क और नये व्यक्ति लाभदायक रहेंगे, आप सिर्फ लाभ पर ही ध्यान नहीं देंगे, अपितु रिश्ते बनाने का भी प्रयास करेंगे. आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण दूसरों के कार्य में ध्यान देंगे, किसी कार्य के लिये की गई यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी, अपने लगाव व नजरिये में बदलाव का अवसर मिलेगा, व्यक्तिगत जीवन में कार्य में सामंजस्य से आप कामयाब रहेंगे.

मिथुन

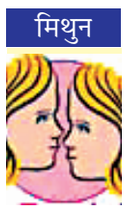

आपका यह सप्ताह प्रगति व सफलता लेकर आ रहा है, जो सपने आप देख रहे हैं उन्हें पूरा करने की राह बनेगी, अपनी वरिष्ठता और सामर्थ्य से ज्यादा जिम्मेदारी आने से आपका तनाव बढ़ सकता है, समाज में महत्वपूर्ण स्थान बनाने मे सफल रहेंगे, दूसरों की मदद कर अपने मन को खुशी देंगे, कार्यस्थल पर अनिश्चय का माहौल बना रहेगा.

कर्क

इस सप्ताह निजी संबंधों पर ध्यान देने का भरपूर समय मिलेगा, पुराने दोस्तों से मुलाकातों का दौर चलेगा, किसी भी योजना को आप इस तरह से अंजाम देंगे कि लोग आपकी तारीफकरेंगे, खर्च की अधिकता रहेगी, आपको आय के नये स्त्रोत तलाशना पड़ेंगे, घूमने का कार्यक्रम बन सकता है, दूसरों की मर्यादा का ध्यान रखें, दोस्त व दुश्मन में फर्क पहचानना पड़ेगा.

सिंह

आपको अपनी अभिरूचियों व खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा, आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार अपने कार्य बनाते चले जायेंगे, भाग्य भी आपकी मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास में वृद्धि होगी, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की ऊँचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे, नई योजनाओं पर विचार होगा.

कन्या

आपको अपने प्रयासों और मेहनत की बदौलत अच्छी सफलता मिलेगी, आपका मौलिक चिंतन आगे बढ़ने में आपकी मदद करेगा, कार्यक्षेत्र में आपको निरंतर सफलता मिलेगी, पारिवारिक व निजी जीवन में खुशियों का अनुभव होगा, जो लोग आपके कार्य में अड़चने खड़ी कर रहे हैं, वे सभी सहयोग करेंगे, मेहनत से लाभ प्राप्त करेंगे.

तुला

परिवार की खुशियों पर बड़ा खर्च होगा, जिसे आप पसंद करते हैं, उसके साथ कुछ समय गुजारकर खुशी मिलेगी, पारिवारिक उत्सवों में प्रसन्नता मिलेगी, उच्च अध्ययन में सफलता के आसार हैं, नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को सफलता मिलेगी, विरोधी आपकी गतिविधियों पर नजर रखेगा, कामकाज में सावधानी रखें, अपने बिखरे हुये कार्यो को समेटने में सफलता मिलेगी.

वृश्चिक

जिद में आकर गलत फैसला लेने से बचें, उच्च अध्ययन में सफलता मिलेगी, जिस योजना को लेकर काफी समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता का योग है. नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते हैं, उन्नति की संभावना है, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी.

धनु

आपका पूरा ध्यान अपने कैरियर व भविष्य की योजनाओं की ओर रहेगा, नई योजनाओं को पूरा करने में सभी का सहयोग रहेगा, लोगों को अपनी बात समझाने में सफल रहेंगे, राह में आ रही मुस्किलों का सामना करने पर कामयाबी मिलेगी, कार्य स्थल पर नई शुरूआत का अनुभव होगा. व्यस्तता के कारण परिवार को वक्त देना मुश्किल होगा.

मकर

परेशानी से छुटकारा मिलेगा, सामाजिक और पारिवारिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी. पार्टियों का दौर जारी रहेगा, दायरा बढ़ाने की कोशिश में रहेंगे. मौजमस्ती छोड़कर कुछ काम करने का मन बनेगा, संपत्ति संबंधी मामले सुलझेंगे, सप्ताहान्त में विरोधियों से सजग रहकर कार्य करें, बुजुर्ग की सलाह पर ध्यान दें.

कुम्भ

अभी तक की गई मेहनत का लाभ मिलेगा. पारिवारिक व सामाजिक जीवन में अपने संबंधों को फिर से घनिष्ठ बनाने में मदद मिलेगी, मानसिक संतोष हेतु कुछ दिन के लिये घर से दूर जा सकते हैं, पारिवारिक सुरक्षा हेतु निवेश करेंगे, कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से मेलजोल बढ़ायें, यह आपके लिये फायदेमंद होगा.

मीन

भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से बनेगा, अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं, वे भी आपकी काबलियत की तारीफकरेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.